कैम्पस कनेक्ट

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

घर घर तिरंगा

■ प्रकाशन वर्ष : 1, ■ अंक : 1 ■ 15 अगस्त, 2025

प्रेरणा-स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्री योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श-मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
श्री दीनानाथ यादव (कुलसचिव)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह-सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक-मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. अनुज कुमार
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त-प्रबन्धन:
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्या
वित्ताधिकारी

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री सत्यम दीक्षित

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश-272202
ईमेल :registrar@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in
(सम्पादन-प्रकाशन पूर्णतः
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार
रचनाकारों के अपने हैं,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे
सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय समाचार बुलेटिन का प्रकाशन होना अत्यन्त सुखद है।

भगवान बुद्ध की पुनीत धरा पर उनके मूल नाम से ही स्थापित सिद्धार्थ विश्वविद्यालय दस वर्ष की वय को पार कर चुका है और इस तरह यह बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ चला है। अतः स्वाभाविक ही इसमें किशोर–मन का उत्साह, उत्कंठा, कुछ नया सीखने–करने की व्यग्रता है। इसलिए निरंतर अब यहाँ कुछ–न–कुछ अच्छा हो रहा है, सार्थक रचा जा रहा है। समाचार पत्रों के सहयोग से वह समाज के सामने आ भी रहा है। तथापि, विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और गतिविधियों को दूर तक पहुँचाने तथा देर तक संरक्षित करने की दृष्टि से इस प्रकाशन की आवश्यकता महसूस हो रही थी, जो अब पूरी हो रही है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्धता इसकी दीर्घायु और सुदूर पहुँच सुनिश्चित करेगी। विश्वविद्यालय परिवार की सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति का यह एक महत्त्वपूर्ण माध्यम भी बनेगा।

किशोर मन की यह भी इच्छा होती है कि वह जो कुछ करे, उस पर ध्यान दिया जाए जिससे कि उसके सीखने–करने की प्रक्रिया को बल मिले। विश्वविद्यालय के शिक्षार्थियों और शिक्षकों के इसी उत्साह और इच्छा को समेटे यह समाचार बुलेटिन न केवल सूचनात्मक वरन् रचनात्मक भी रहेगा, जिसमें विश्वविद्यालय परिवार का योगदान प्रतिबिंबित होगा। इस प्रकाशन से विश्वविद्यालय के उत्थान में एक नया आयाम जुड़ गया है। मैं 'सिद्धार्थ विश्वविद्यालय समाचार' को मूर्त रूप प्रदान करने वाली टीम को साधुवाद देती हूँ और साथ–साथ शुभकामनाएं भी कि यह नियमितता एवं निरन्तरता के साथ सोद्देश्य और सार्थक रूप से प्रकाशित होता रहेगा।

स्वाधीनता दिवस की अनेकानेक बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

जयहिन्द!

प्रो. कविता शाह (कुलपति)

स्वागत

बुद्ध की है यह धरा महान।
यहाँ पर स्वागत है श्रीमान!
कि है यह तीर्थभूमि पावन,
धर्म–पथिकों की मनभावन;
अखिल मानवता का अभिमान!
यहाँ से मिला शांति–संदेश,
अहिंसा का फैला उपदेश,
विश्व–मैत्री का गूंजा गान!
विश्वविद्यालय नव अभिराम,
खड़ा सिद्धार्थ का ले शुभ नाम,
ध्येय लेकर के उच्च महान!
आज रचना है नव परिवेश,
मिटा आपसी कलह–विद्वेष;
चला समता का नव अभियान!
नहीं हो ऊँच–नीच का भेद,
विषमता का होवे उच्छेद;
बढ़े मानव–गरिमा का मान!

वीणावादिनि! वर दो।

वीणावादिनि! वरदहस्त सिर धर दो।
भाव हृदय में मुद-मंगलमय भर दो।
चिरालोक फैले वसुधा पर अभिनव-
ज्योति जगा, जग जगमग-जगमग कर दो!

भरे ज्ञान अज्ञान लुप्त हो जाये।
जगे ज्योति तम सकल सुप्त हो जाये।
भर दो, भर दो माँ, जगती में रस यों-
नीरसता गिरि-शृंग गुप्त हो जाये!

वीणावादिनि! वीणा का गुंजार करो।
शुष्क जगत् में मधुरस का संचार करो।
कलह मिटे सुख-शान्ति सकल जग में छाये,
प्रेम-रागिनी की ऐसी झंकार करो!

मैं, तुम, यह, वह की सीमाएं तोड़ दो।
सबको ले 'हम' की ताकत से जोड़ दो।
मानवता की फसल लहलहाये सुखकर,
जीवन-रसधारा को ऐसा मोड़ दो!

कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन परम् विद्याधाम
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा अहिंसा प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शांति–पारावार,
ज्ञान का आलोक मानव का परम संदेश,
नित्य प्रज्ञा प्रीति गुरुओं का नवल निवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन ....

परम् पावनपरम् निर्मल पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का आनंद का आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।

आत्मदीप प्रकाश पावन......

नमन इस को इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा महाकरुणा शांति का संदेश,
विश्वगुरु का यह तपोमय ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन परम् विद्याधाम
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।

15 अगस्त : प्रणति और प्रेरणा का दिन

प्रो. कविता शाह

हम लाये हैं तूफान से कश्ती निकाल के।
इस देश को रखना मेरे बच्चो सँभाल के।

15 अगस्त, स्वतन्त्रता दिवस के दिन कवि प्रदीप द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियाँ स्वतः मानस–पटल पर स्मरण हो आयीं। यह दिन हमारे द्वारा अपनी आजादी का जश्न मनाने के साथ–साथ कुछ मनन–चिन्तन का दिन भी है। गीत की पहली पंक्ति अपने उन अमर सेनानियों की याद दिलाती है, जिन्होंने पराधीनता के थपेड़े खाती हुई हमारे देश की कश्ती को तूफान से निकालकर स्वाधीनता की मंजिल पर पहुँचा दिया। स्वाधीनता दिवस उन्हें नमन करने का दिन है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का क्षण है, उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर है। पूर्वजों के सुकृत्यों को याद करते रहने से हमारे मंजिल से भटकने का अंदेशा कम रहता है। उनकी स्मृति हमें सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। इसलिये हजारों नहीं, लाखों नहीं, करोड़ों–करोड़ उन स्वतन्त्रता–सेनानियों को आज के दिन मैं अपनी ओर से और अपने विश्वविद्यालय परिवार की ओर से सश्रद्ध नमन करती हूँ, जिन्होंने अपने त्याग और बलिदान से हमें स्वतन्त्र भारत में श्वास लेने का अधिकार दिलाया।

उद्‌धृत पंक्तियों में से पहली पंक्ति यदि प्रेरणाप्रद है तो दूसरी सन्देशपरक। यह पंक्ति देशवासियों से आह्वान है– देश को सँभालकर रखने का। यह आह्वान कैसे पूरा होगा? यह होगा हमारे द्वारा अपने–अपने कर्तव्यों के पालन से। पराधीन भारत में हमारे नागरिक अधिकार विदेशी सत्ता द्वारा बलात् अधिकृत कर लिये गये थे। आजादी के बाद बने हमारे संविधान ने हमारे वे अधिकार हमको प्रदान किये। हम आज एक ऐसी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में रहते हैं, जिसमें हमारे अधिकारों के रक्षण के लिये अनेक विधान हैं। हम उनका उपभोग करते भी हैं; मगर हमको यह ध्यान रखना है कि जिस संविधान ने हमें अधिकार दिये हैं, उसी ने हमारे लिये कुछ कर्तव्य भी निर्धारित किये हैं। सब लोग सिर्फ अपने अधिकारों की ही बात करें और कर्तव्य–पालन से कतराने लगें तो किसी के अधिकार सुरक्षित नहीं रह सकते। 'महाभारत' की प्रसिद्ध सूक्ति है– 'आत्मने प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।'

अर्थात् जो अपने को अच्छा न लगे, वह दूसरों के साथ मत करो। यही अधिकार की सीमा है, कर्तव्य का पथ है। संविधान भी हमें यही सिखाता है। तो, यदि हम चाहते हैं देश को सँभालकर रखना, तब हमें और कुछ विशेष नहीं करना है। बस, अपने अधिकारों की सीमा का ध्यान और हर परिस्थिति में कर्तव्य का बोध रहना आवश्यक है। यदि सभी अपने–अपने कर्तव्यों का सम्यक्‌रूपेण निर्वाह करेंगे, तो हमारे सबके अधिकार स्वतः सुरक्षित हो जायेंगे। उसके लिये हमें अतिरिक्त कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

15 अगस्त 1947 को भारत को बहुत संघर्श, त्रासदी एवं विभाजन की भारी कीमत चुकाकर प्राप्त हुई। विस्थापन के साथ बहुतों ने प्राणों की आहुति दी। यह दिवस बार–बार स्मरण कराता है कि हर तरह से और हर मोर्चे पर हमें सजग, सावधान और सक्रिय रहने की आवश्यकता है। इतिहास में हमने बहुत थपेड़े खाये हैं, पर अब नये विकसित भारत के साथ नवीन इतिहास रचने का समय है, जिसमें सबकी सहभागिता होगी। अपने योगदान के लिये यह हमें आत्मतोष से भी सम्पन्न करेगा।

असम्भव और अलभ्य संसार में कुछ भी नहीं है; पर इसके लिये जिस जोश, जज्बे, लगन और समर्पण की आवश्यकता होती है, वह हमारे भीतर होना चाहिए और वह हममें है। बस, हमें उसे पहचानने तथा पुनः स्मरण करने की आवश्यकता है। बाधाएं अनेक प्रकार से आकर रास्ता घेरेंगीं, लेकिन हमें उनसे पार पाने का सुमार्ग ढूँढ़ना होगा। दूसरो की उन्नति सबको अच्छी नहीं लगती है। लेकिन उन पर ध्यान न देकर हम सौ कठिनाइयों पर विजय पाकर आगे बढ़ेंगे और अपनी मंजिल पाकर रहेंगे। ऐसा जज्बा हमारे भीतर होगा तो हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचने से कोई न रोक सकेगा, यह सिद्ध बात है।

वर्ष 2047 में हमारे प्रधानमन्त्री जी का भारत को विकसित रूप में खड़ा करने का जो संकल्प है, उस संकल्प में हमारा संकल्प भी मिले और हम भी अपने ढँग से यथासम्भव योगदान कर सकें, यही इस 79वें स्वाधीनता दिवस की हमारी प्रेरणा बने, ऐसी शुभकामना करती हूँ।

देश विकसित भारत बनने का संकल्प लिये हुए है तो हमारा विश्वविद्यालय भी इसी विकास–पथ का पथिक है और इसका भी यही संकल्प होना चाहिए। यह कार्य सभी के समन्वित सहयोग और प्रयास से ही सम्भव है। इसलिये यदि हम और हमारे युवा छात्र–छात्रा अपने सद्प्रयत्नों से अपने विश्वविद्यालय को विकसित बना सकें तो विकसित भारत बनाने की दिशा में हमारा भी एक छोटा सा योगदान होगा। मुझे विश्वास है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के सभी शिक्षार्थी, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी इसके लिये प्रतिबद्ध हैं और हमारे प्रधानमन्त्री हमारा गौरव, हमारी कुलाधिपति हमारी प्रेरणा, हमारे मुख्यमन्त्री हमारा बल की छत्र–छाया में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सदैव सुरक्षित, पल्लवित, पुष्पित होता रहा है और रहेगा।

अपनी दस वर्ष की आयु में ही जिस तीव्रता से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने अपनी अब तक की विकास–यात्रा पूरी की है, आगे उससे भी अधिक तेजी के साथ यह अपने लक्ष्य की ओर उन्मुख होगा, ऐसी आशा करते हुए मैं समस्त देशवासियों तथा विश्वविद्यालय परिवार को स्वतन्त्रता दिवस की बधाई देती हूँ और शुभकामना करती हूँ कि सभी स्वस्थ, सुखी और सक्रिय रहते हुए राष्ट्र–प्रेम से ओत–प्रोत रहें। जयहिन्द! जय भारत!

कुलपति
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

14 अगस्त : विभीषिका की वेदना का दिवस

• डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

15 अगस्त हमारे देश के लिये उमंग और उल्लास का दिवस है तो वहीं 14 अगस्त त्रासदी का दिवस। यह इसलिये क्योंकि भारत की आजादी के ठीक पहले यानि 14 अगस्त, 1947 को भारत के आधुनिक इतिहास में एक काला अध्याय जुड़ा। वह काला अध्याय देश के बँटवारे के रूप में दर्ज हुआ, जो आज भी हमें टीसता है। आज जब हम 15 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस पूरे उत्साह, उमंग और गर्व के साथ मना रहे हैं, तिरंगे के तले खड़े होकर अपने अमर शहीदों के बलिदान को नमन कर रहे हैं, ऐसे में यह भी आवश्यक है कि हम स्वतंत्रता प्राप्ति के उस क्षण से पहले की सबसे बड़ी राष्ट्रीय त्रासदी– भारत विभाजन– को याद करें। यह केवल भूगोल का बँटवारा नहीं था, बल्कि हमारी सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक ताने–बाने पर पड़ा गहरा आघात था। उस विभीषिका को समझना, उसके उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण करना और इतिहास के उस काले अध्याय से सबक लेना, आज के युवाओं के लिए उतना ही जरूरी है जितना स्वतंत्रता का उत्सव मनाना।

भारत का विभाजन 1947 में धार्मिक आधार पर हुआ। यह निर्णय अचानक नहीं आया था, बल्कि दशकों से चल रहे राजनीतिक षड्यंत्र, सांप्रदायिक मानसिकता और 'फूट डालो और राज करो' की औपनिवेशिक नीति का परिणाम था। मुस्लिम लीग और उसके नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने मुस्लिम अलगाववाद को संगठित रूप से आगे बढ़ाया। 1940 के लाहौर प्रस्ताव से लेकर 'डायरेक्ट एक्शन डे' जैसी घटनाओं ने हिंदू-मुस्लिम एकता को गहरी चोट पहुंचाई। मुस्लिम मानसिकता में यह विचार गहराई से रोपा गया कि मुसलमानों की पहचान और अधिकार केवल अलग राष्ट्र में सुरक्षित रह सकते हैं। यह सोच भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा, जो सदियों से विविधता में एकता का प्रतीक रही है– के बिल्कुल विपरीत थी। ब्रिटिश सरकार ने भी इस मानसिकता को बढ़ावा दिया। उसका उद्देश्य स्पष्ट था– भारत को इस तरह विभाजित करना कि वह स्वतंत्रता के बाद भी कमजोर और अस्थिर बना रहे। सीमाओं को खींचने के लिए रेडक्लिफ ने जैसी जल्दबाजी की और असंवेदनशील प्रक्रिया अपनाई, जिससे करोड़ों लोग रातोंरात शरणार्थी बन गए। यह केवल भूभाग का विभाजन नहीं था, बल्कि यह मानवीय त्रासदी थी, जिसमें लाखों निर्दोष मारे गए, महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार हुआ, और सांप्रदायिक हिंसा ने सब कुछ झुलसा दिया।

तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व भी इस त्रासदी की जिम्मेदारी से पूरी तरह मुक्त नहीं था। सत्ता प्राप्ति की जल्दबाजी, मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति और निर्णायक क्षणों में दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी ने विभाजन की राह आसान कर दी। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, पंडित नेहरू और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे नेताओं की दृष्टि और रणनीति एक दूसरे से भिन्न थी, लेकिन कांग्रेस के सामूहिक निर्णयों में अक्सर सिद्धांतों से अधिक राजनीतिक समझौते हावी रहते थे। डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे विचारकों ने इसे औपनिवेशिक षड्यंत्र के साथ-साथ भारतीय नेतृत्व की असफलता भी बताया। विभाजन का घाव केवल 1947 का इतिहास नहीं है, बल्कि आज भी उसकी छाया हमारे वर्तमान में दिखती है। जब हम जाति, भाषा या क्षेत्र के आधार पर समाज को बाँटने वाली राजनीति को देखते हैं, तो यह उसी मानसिकता की पुनरावृत्ति है जिसने कभी राष्ट्र को दो टुकड़ों में बाँट दिया था। आज के युवाओं, विशेष रूप से विद्यार्थियों, को यह समझना होगा कि राष्ट्र निर्माण का कार्य केवल आर्थिक विकास से पूरा नहीं होता, इसके लिए सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास की भी आवश्यकता होती है।

15 अगस्त का उत्सव मनाते समय हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारी स्वतंत्रता लाखों बलिदानों और अनगिनत पीड़ाओं की कीमत पर मिली है। विभाजन के वे घाव, जिनसे लाखों परिवार बिखर गए, आज भी हमें चेतावनी देते हैं कि तुष्टीकरण, सांप्रदायिकता और संकीर्ण स्वार्थों की राजनीति से राष्ट्र कमजोर होता है। यदि हम एक सशक्त, अखंड और विकसित भारत का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें इन प्रवृत्तियों को अस्वीकार करना होगा और भारतीय संस्कृति के उस शाश्वत आदर्श को अपनाना होगा जो हर व्यक्ति को एक सूत्र में बाँधता है। आज का भारत अवसरों और चुनौतियों के संगम पर खड़ा है। हमारी युवा पीढ़ी के सामने तकनीकी प्रगति, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और आर्थिक विकास के द्वार खुले हैं, लेकिन साथ ही उन्हें विभाजन जैसी ऐतिहासिक त्रासदियों से सबक लेकर यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में कोई भी शक्ति हमें जाति, एवं क्षेत्र के आधार पर फिर से न बाँट सके। यही विभाजन की सबसे बड़ी सीख है, और यही स्वतंत्रता दिवस मनाने का सच्चा अर्थ भी।

बलिदानियों को याद कर लीजिए

● साधना चौधरी 'कँवल'

धूप में तपी तो कभी ठंड से जड़ाई उन,
लौह सी जवानियों को याद कर लीजिए।
इंकलाब और देश प्रेम से जो रही भरी,
जोश की रवानियों को याद कर लीजिए।
छोड़ के गए जो, देश हित शूरवीर कल,
उनकी निशानियों को याद कर लीजिए।
जिन बलिदानियों ने हँस प्राण दान किए,
उन बलिदानियों को याद कर लीजिए।
दिन ये स्वतंत्रता का पावन है आया आज,
आओ घूम-धाम इसे मिल के मनाते हैं।
देश के जवानों ने जो गोरों को भगा के गढ़ा,
इतिहास पढ़कर सबको सुनाते हैं।
जाति-पति ऊँच-नीच वाला हर भाव भूल,
एकता के सूत में पिरो के इतराते हैं।
हाथ में तिरंगा ले के जय हिन्द बोलकर,
भारती का मान आसमान में चढ़ाते हैं।

उदीयमान कवयित्री, पूर्व छात्रा,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

भारतीय धरोहर

● तृप्ति आर्य

गूंजी वेदों की वाणी, उपनिषदों का ज्ञान
वीणा की तान, खिलखिलाते खेत-खलिहान
योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, वस्त्र, भोजन सबका अद्भुत विधान
तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, ज्ञान की रहे खान
गीता का उपहार दिया, भारत ने इस जहान
गणित,खगोल, विज्ञान, शिल्प में भारत सबसे आगे रहा,
ज्ञान की इस परंपरा पर, हर भारतीय को गर्व रहा
नाट्यशास्त्र ने दिखाया, नृत्य और संगीत का अद्भुत मार्ग,
संगीत, नृत्य, रंगमंच से, संस्कृति का हुआ विस्तार,
साहित्य में रसों की गूंज, संगीत में थाप की खनक,
नृत्य में रुन-झुन की झनक
कवियों की रचना, कलाकारों की साधना
भक्ति, ज्ञान, कर्म पथ की सबमें समाहित भावना
गुरुकुल में शिक्षा मिली, जीवन के हर पहलू की
सहज समझ मिली धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की
और मिली चरक,सुश्रुत, पतंजलि से समझ चिकित्सा और योग की
ऋषि-वाणी में जीवन का सार अद्भुत मिला
उच्च मूल्य,उच्च आदर्शों से जीवन का दृश्य अद्भुत दिखा
उनकी उच्च शिक्षाओं से ही तो समाज ने मार्ग चुना
भक्ति के गीतों में, छिपा आत्मा का उच्च स्वर
मीरा, तुलसी, सूर की वाणी में दिखा प्रेम का असर
लोकगीतों में बसी, जनजीवन की कहानी
हर स्थान की बोली में, वर्षो की अमिट कहानी
अति अलौकिक, अति मनोहर, भारतीय ज्ञान की कहानी
यह दुर्लभ कहानी रटी है ,हर भारतीय को मुंह जवानी

शोध सहायक, गृहविज्ञान विभाग
विज्ञान संकाय, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

संपादकीय

को इमं पठवि विजेस्सति यमलोकं च इमं सदेवकं।
को धम्मपद सुदेशितं कुसलो पुष्पमिव पचेस्सति।।
सेखो पठविं विजस्सति यमलोकं च इमं सदेवकं।
सेखो धम्मपदं सुदेसितं कुसलो पुष्पमिव पचेस्सति।।

धम्मपद के इस पद का भावार्थ है- 'इस पृथ्वी को और देवताओं सहित इस यमलोक को कौन जीतेगा? कौन कुशल मनुष्य भली प्रकार उपदिष्ट धर्म के पदों का पुष्प की भाँति चयन करेगा?' धम्मपद में यह प्रश्न आता है और फिर इसका उत्तर इस प्रकार आता है- 'सुशिक्षित शिष्य इस पृथ्वी को और देवताओं सहित इस यमलोक को जीतेगा। सुशिक्षित ही भली प्रकार उपदिष्ट धर्म के पदों का पुष्प की भाँति चयन करेगा।'

यह सुशिक्षित की महिमा है। अतः सुशिक्षित होना सबको बहुत आवश्यक है। दो शब्द हैं- शिक्षा और सुशिक्षा। इन्हीं से शिक्षित और सुशिक्षित शब्द बने हैं। एक और तीसरा शब्द इन्हीं के क्रम में चलता है- साक्षर। साक्षर होना सुशिक्षित होने की गारण्टी नहीं है। हाँ, यह किसी को शिक्षित या सुशिक्षित बनाने में सहायक अवश्य हो सकता है। उसका अर्थ मात्र पढ़ना-लिखना जानने तक सीमित है। अतः इसका कार्य पुस्तकीय ज्ञान तक प्रत्यक्ष पहुँच से सम्बन्धित है। शिक्षा का सम्बन्ध सीखने से है। सीख व्यक्ति कुछ भी सकता है, कहीं से भी सकता है। अच्छा भी सीख सकता है, बुरा भी सीख सकता है। लेकिन सुशिक्षा का अर्थ है- अच्छी शिक्षा और अच्छी तरह से शिक्षा। इसमें अच्छी सीख और अच्छे प्रकार से सीख दोनों भाव सम्मिलित हैं। अच्छी तरह से शिक्षा प्राप्त हो, इसके लिये अच्छे शिक्षण-संस्थानों का चयन शिक्षार्थी करता है। अच्छी शिक्षा शिक्षार्थियों को मिले, इसके लिये शिक्षण-संस्थान अपनी प्रविधि विकसित करते हैं। इसमें पाठयक्रम और पाठ्येतर गतिविधियाँ दोनों सम्मिलित रहते हैं।

अतीत में हम सुशिक्षा प्रदान करते थे, जिसके लिये विश्व भर में हमारी ख्याति थी और इसी के लिये 'विश्वगुरु' का सम्मान भी हमारे देश को प्राप्त था। हमारी प्राचीन प्रणाली पुस्तकीय ज्ञान से अधिक व्यावहारिक ज्ञान पर जोर देती थी। इसलिये पुस्तकीय ज्ञान से रहित लोगों के जीवन में वह सुशिक्षा संस्कार के रूप में सम्मिलित थी, विभिन्न कौशलों के रूप में समाहित थी। एक बिना पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी किसी की टूटी हड्डी जोड़ सकता था, पक्षाघात ठीक कर सकता था- मतलब, चिकित्सक हो सकता था। वह ख्यात् संगीतज्ञ हो सकता था, कवि हो सकता था, कलाकार हो सकता था, शिल्पकार हो सकता था और ये सब भी ऐसे-वैसे नहीं, बहुत प्रतिष्ठित रूप में भी। इनके अनेकानेक उदाहरण हमारे समाज में उपलब्ध है। पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 हमारे उसी गौरव को लौटा लाने की महत्त्वाकांक्षा का प्रतिफल है।

शिक्षण संस्थानों का कार्य इसी सुशिक्षा को प्रदान करना है। अर्थात् उनका काम लोगों को मात्र शिक्षित नहीं, सुशिक्षित बनाना है। सुशिक्षित होने के उपरान्त अपनी शिक्षा का सदुपयोग भी आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र मे कितनी ही ऊँचाई प्राप्त करने के पश्चात् यदि उपका उपयोग नहीं हुआ, वह किसी के काम नहीं आयी तो उसे पाना व्यर्थ ही रहा। फिर तो स्थिति वही हो जायेगी कि 'बड़ा भया तो क्या भया जैसे पेड़ खजूर। पन्थी को छाया नहीं फल लागै अति दूर।।' अतः शिक्षा जीवनोपयोगी होनी चाहिए। यह कार्य बहुत प्रकार से होता है। सिर्फ पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रखकर विद्यार्थियों को सुशिक्षित नहीं बनाया जा सकता है। संस्था में चलने वाले विविध प्रकार के सांस्कृतिक, साहित्यिक, बौद्धिक, खेल-कूद आदि से सम्बन्धित आयोजन विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं तो संस्था के प्रकाशन उन्हें अच्छे सृजन के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसी उद्देश्य से इस समाचार पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। माननीय कुलाधिपति महोदया की सत्प्रेरणा से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति महोदया ने एक योजना बनायी और वह योजना मूर्त रूप ले रही है, तो यह हम सबके सन्तोष का विषय है। माननीया कुलपति जी में कुछ नया करने का उत्साह है, सुरुचि है और सदिच्छा भी। इसी का परिणाम यह प्रकाशन है। उनकी इस नवाचारी पहल का हम स्वागत करते हैं, एतदर्थ उन्हें साधुवाद देते हैं और उन्होंने हमें यह दायित्व सौपा, इसके लिए उनके प्रति आभार ज्ञपित करते हैं। हमारा प्रयास रहेगा कि हम उनके विश्वास पर खरे उतरें और इस लघु समाचार पत्रिका का नियमित एवं निरंतर प्रकाशन जारी रह सके।

अगस्त माह हमारे देश के लिये बहुत शुभ तथा गौरवशाली है। यह दीघकालीर्न पराधीनता के पश्चात स्वतन्त्रता के स्वर्ण विहान का प्रथमतः स्वागत करने वाला महीना है। इसी माह मे हमने सन् 1947 मे 15 तारीख को अंग्रेजी शासन से मुक्ति पायी और हमारे राष्ट्रीय जीवन मे स्वाधीनता के एक नवल प्रभात का आगमन हुआ। अतः अगस्त माह से 'सिद्धार्थ विश्वविद्यालय समाचार' का प्रकाशन होना निश्चित रूप से हमारा उत्साह बढ़ा रहा है। आशा है, विश्वविद्यालय परिवार को तथा विश्वविद्यालय के शुभचिन्तकों को यह प्रयास पसन्द आयेगा और वे उसका स्वागत करेंगे। यह प्रवेशांक है। इसमें कुछ त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। निश्चित रूप से आपके मन में कुछ प्रतिक्रियाएं इसको लेकर उपजेंगी ही। हम आपके सुझावों, विचारों, प्रतिक्रियाओं का खुले मन से स्वागत करेंगे, क्योंकि यह हमारे प्रयासों को और बेहतर बनाने की दिशा में एक सहयोग ही होगा। तो आइए तैत्तरीयोपनिषद् के इस श्लोक को साथ दोहराते हुए आगे बढ़ें-

ऊँ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।
जय भारत, जय भारती।

हमारे देश का शुभ दिन

हमारे देश का शुभ दिन, पुनः एक बार आया है।
कि यह स्वाधीनता का पर्व, खुशी अपार लाया है।
बधाई के संदेशे आ रहे शुभकामना के साथ,
कि वंदेमातरम् जयहिंद के उद्घोष लाया है।
हमारी आन-बान-शान का ध्वज आज फहरेगा,
तिरंगा भरकर ऊर्जा और हर्ष अपार लाया है।
आज कर लें नमन हम उन शहीदों को भी कि जिनके,
अतुल बलिदान का फल हमने, तुमने, सबने पाया है।
हैं करने मूर्त उनके स्वप्न, यह हम भूल न पायें,
कराने याद यह संकल्प, शुभ दिन फिर से आया है।
करें कुछ हम भी ऐसा, जिससे सबको गर्व हो हम पर,
यही उत्साह और शुभ प्रेरणा यह देने आया है।
हमारी है बधाई और मंगलकामना सबको,
नमन उनको, जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं इन्फ्लिबनेट के मध्य एमओयू

उच्च शिक्षा एवं डिजिटल पुस्तकालय समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

दिनांक 22 जुलाई 2025 को लखनऊ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी कन्वेंशन सेंटर में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु और इन्फ्लिबनेट सेंटर, गांधीनगर (गुजरात) के मध्य एक महत्त्वपूर्ण समझौता-ज्ञापन (MoU) का आदान-प्रदान हुआ। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की मा0 कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह एवं इन्फ्लिबनेट की निदेशक डॉ. देविका मडाली ने एमओयू का आदान-प्रदान किया। कार्यक्रम की विशिष्ट उपस्थिति में अपर मुख्य सचिव बॉबड़े भी मंचासीन रहे। इसएमओयू के अंतर्गत दोनों संस्थाओं के मध्य डिजिटल लाइब्रेरी सुविधाओं, रिसर्च डाटा मैनेजमेंट, ई-सामग्री साझा करने एवं ई-शोध संसाधनों की उपलब्धता को लेकर समन्वय स्थापित किया जाएगा।

इससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों को उन्नत शोध एवं अध्ययन सामग्री सरलता से उपलब्ध हो सकेगी, जिससे अकादमिक गुणवत्ता में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। इस गरिमामयी अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव दीनानाथ यादव तथा पुस्तकालय प्रभारी डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव की विशेष उपस्थिति रही, जिनकी सक्रिय सहभागिता इस समझौते को मूर्त रूप देने में महत्वपूर्ण रही। कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने संबोधन में कहा कि इस समझौता ज्ञापन से न केवल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय संसाधनों का विस्तार होगा, बल्कि डिजिटल इंडिया के लक्ष्य की दिशा में भी यह एक सार्थक कदम सिद्ध होगा। इन्फ्लिबनेट जैसी अग्रणी संस्था के साथ सहयोग से शोध एवं अध्ययन को नई दिशा प्राप्त होगी।

उल्लेखनीय है कि इन्फ्लिबनेट (Information and Library Network) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन यूजीसी द्वारा प्रायोजित एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था है, जो उच्च शिक्षा संस्थानों के मध्य सूचना एवं पुस्तकालय सेवाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रही है। यह MoU उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के समावेश, शोध सहयोग और पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण को गति देगा, जिससे छात्र-छात्राओं और शोधकर्ताओं की विश्वस्तरीय ज्ञान संसाधनों तक सहज पहुँच हो सकेगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक राज्यपाल को भेंट

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह द्वारा विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल को विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'योग साहित्य : ज्ञान का अक्षय भंडार' (सिद्धार्थनगर जनपद के स्थानीय ज्ञान एवं अनुभव का संकलन) भेंट की गई।

यह पुस्तक उत्तर प्रदेश राज्यपाल के निर्देश के क्रम में, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजन के अंतर्गत तैयार की गई है। इस विशेष संकलन में सिद्धार्थनगर जनपद के ग्रामीण अंचलों में विद्यमान योग संबंधी पारंपरिक ज्ञान, अनुभव और लोकाचार को संरक्षित कर प्रस्तुत किया गया है। कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने जानकारी दी कि यह पुस्तक केवल योग पर आधारित शारीरिक अभ्यास को ही नहीं, अपितु इस क्षेत्र के सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी उजागर करती है। प्रोफेसर शाह ने बताया कि पुस्तक में सिद्धार्थनगर के जनजीवन में प्रचलित योग संबंधी पारंपरिक विधाओं, घरेलू उपचारों, जीवनशैली और आस्थाओं का संकलन किया गया है। यह प्रयास न केवल भारत की ज्ञान परंपरा को संरक्षित करता है, बल्कि इसे आधुनिक संदर्भ में जन-सामान्य तक पहुँचाने का एक अभिनव माध्यम भी बनता है।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने पुस्तक प्राप्त करते हुए विश्वविद्यालय के इस प्रयास की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के अनुसंधानात्मक प्रयासों से भारत की प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में मदद मिलेगी। यह न केवल सांस्कृतिक जागरूकता का कार्य है, बल्कि विकसित भारत के निर्माण में ऐसे कदम मील का पत्थर सिद्ध हो सकते हैं। राज्यपाल ने यह भी उल्लेख किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में मौखिक परंपरा के माध्यम से स्थान-विशेष में सुरक्षित ज्ञान को लिखित रूप में संकलित करना अत्यंत सराहनीय है। यह पुस्तक सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की स्थानीय संदर्भों पर आधारित अनुसंधान क्षमता और समाज उपयोगी शिक्षा की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय और साउथ एशिया फाउंडेशन के बीच समझौता-ज्ञापन

लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुंबिनी, नेपाल में 27-28 जुलाई 2025 को सम्पन्न हुए 'डिप्लोमेसी एंड बुद्धाज टीचिंग पाथ टू ग्लोबल पीस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट' सिम्पोजियम के उद्‌घाटन समारोह के दौरान सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु (उत्तर प्रदेश) और साउथ एशिया फाउंडेशन-नेपाल (SAFN) के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता-ज्ञापन प्रो. कविता शाह, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, और श्री राहुल बरुआ, मानद महासचिव, साउथ एशिया फाउंडेशन द्वारा हस्ताक्षरित किया गया। इस साझेदारी के अंतर्गत साउथ एशिया सेंटर फार पीस रिसर्च एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट की स्थापना की जाएगी, जो शांति, बौद्ध अध्ययन एवं सतत विकास पर संयुक्त अनुसंधान एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करेगा। यह पहल वैश्विक शांति और विकास के लिए बौद्ध शिक्षाओं की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए, अंतरराष्ट्रीय सहयोग को नया आयाम प्रदान करेगी।

इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि बुद्ध की शिक्षाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी दो सहस्राब्दी पहले थीं। इस MoU के माध्यम से हमारा उद्देश्य इन्हें वैश्विक शांति एवं टिकाऊ विकास के संदर्भ में पुनः स्थापित करना है। विश्वविद्यालय के नैक समन्वयक प्रो सौरभ ने कहा कि इस साझेदारी का उद्देश्य दक्षिण एशियाई क्षेत्र में बौद्ध दर्शन, शांति अध्ययन एवं सतत विकास के क्षेत्र में सहयोगात्मक शोध कार्यों को गति देना है। यह केंद्र छात्र, शोधार्थियों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान करेगा, जिससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सांस्कृतिक संवाद को बल मिलेगा। इस कार्यक्रम में नेपाल, भारत सहित कई दक्षिण एशियाई देशों के बौद्ध विद्वानों, शोधकर्ताओं एवं विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आकांक्षी जिले में उम्मीद जगाता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

आकांक्षी जिला सिद्धार्थनगर में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता की शिक्षा से लगातार आशा की किरण जगा रहा है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास की गतिविधियाँ छात्रों की उपलब्धियों के रूप में फल देने लगी हैं। विश्वविद्यालय के आठ छात्रों को असिस्टेंट प्रोफेसर और पी-एच0डी0 के लिए आयोजित हाने वाली राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (यू0जी0सी0-नेट) की की परीक्षा में सफल घोषित किया गया है। एमबीए विभाग से सुश्री प्राची जायसवाल, श्री पंकज शर्मा और श्री प्रद्युम्न कुमार दुबे, संस्कृत विभाग से श्री आनंद कुमार पासवान, अवन्तिका तिवारी, समाजशास्त्र विभाग से सुश्री पूजा गुप्ता, हिंदी विभाग से शिवम कसौधन एवं रसायनशास्त्र से सुनयना साहनी ने यूजीसी-नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है। यूजीसी द्वारा 20 जून 2027 को घोषित परिणामों में अखिल भारतीय स्तर पर लगभग सात लाख पचास हजार उम्मीदवार शामिल हुए और लगभग पचपन हजार उम्मीदवारों ने परीक्षा उत्तीर्ण की। सफल छात्रों ने अपनी खुशी जाहिर की एवं विश्वविद्यालय के शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने राष्ट्रीय स्तर पर शानदार उपलब्धि के लिए छात्रों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय एक आकांक्षी जिले में स्थित है और तुलनात्मक रूप से नया है, लेकिन विश्वद्यालय के छात्रों के सपनों को पंख प्रदान करने की प्रतिबद्धता ने उन्हें ऊँची उड़ान भरने में सक्षम बनाया है।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता प्रदान करने के लिए एक करियर परामर्श प्रकोष्ठ की स्थापना की है। विश्वविद्यालय के प्रयास भविष्य में और अधिक परिणाम लाएंगे और क्षेत्र के विकास में एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनेंगे। वाणिज्य संकाय के डीन एवं आईक्यूएसी निदेशक प्रो. सौरभ ने सभी छात्रों को बधाई दी और कहा कि छात्रों को जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करने की विश्वविद्यालय की पहल के परिणाम सामने आने लगे हैं। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में छात्रों की लगन और प्रयास उन्हें सफलता की ओर ले जातेहैं। छात्रों की यह उपलब्धि जिले में विकास और आकांक्षाओं को जगाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। कला संकाय की डीन एवं छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने कहा कि यह छात्रों और विश्वविद्यालय के लिए खुशी का क्षण है। उन्होंने कहा कि छात्रों, संकाय सदस्यों और प्रशासन की प्रतिबद्धता छात्रों की सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। सिद्धार्थनगर जिले के अन्य छात्र भी उच्च उपलब्धियों के लिए प्रेरित होंगे। विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो0 प्रकृति राय ने छात्रों को प्रयोगात्मक शिक्षा हेतु आधारभूत व्यवस्था जैसे कि प्रयोगशाला प्रदान देने पर बल दिया और सभी छात्र छात्राओं को बधाई दी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'एक पौधा माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत पौधारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में राष्ट्रीय सेवायोजना के तत्वाधान में आज उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित 'एक पौधा माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास और जागरूकता के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह तथा कुलसचिव दीनानाथ यादव की गरिमामयी उपस्थिति में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्षगण, प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थीगण ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर में औषधीय, पौराणिक एवं जीवन उपयोगी पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि आज का यह पौधारोपण केवल प्रतीकात्मक क्रिया नहीं, बल्कि यह भावी पीढ़ी के जीवन को

सुरक्षित, समृद्ध और स्वस्थ बनाने की एक दूरदर्शी पहल है। 'एक पौधा माँ के नाम' अभियान न केवल पर्यावरणीय चेतना को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह हमारी भावनात्मक-सांस्कृतिक परंपराओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार हम अपनी माँ की सेवा, सुरक्षा और देखभाल करते हैं, उसी प्रकार लगाए गए हर पौधे की भी देखभाल, पालन-पोषण और संरक्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। इस अभियान की वास्तविक सफलता तभी मानी जाएगी, जब लगाए गए पौधों को हम बड़ा होते हुए देखेंगे और उनका संरक्षण सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने कहा कि आज के युग में जब जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण जैसी समस्याएं मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन रही हैं, ऐसे में वृक्षारोपण ही नहीं, वृक्ष संरक्षण ही एक स्थायी समाधान है। हमारा विश्वविद्यालय इस दिशा में निरंतर अग्रणी भूमिका निभा रहा है और इस अभियान को एक दीर्घकालिक हरित आंदोलन में परिवर्तित करने हेतु कटिबद्ध है।

इस अवसर पर कुलसचिव दीनानाथ यादव ने भी पौधरोपण की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि पर्यावरण की रक्षा हम सबकी साझी जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया है कि लगाए गए प्रत्येक पौधे की निगरानी और संरक्षण के लिए विभागवार उत्तरदायित्व तय किया जाएगा। उक्त कार्यक्रम का सफल आयोजन सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डा. देवबख्श सिंह एवं पौधारोपण कार्यक्रम के नोडल अधिकारी एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. यशवंत यादव की देखरेख में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में समस्त संकायों, विभागों और इकाइयों ने भाग लिया तथा सभी ने अपने-अपने स्तर पर पौधों के संरक्षण का संकल्प लिया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एमबीए छात्र को रोजगार

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एमबीए विभाग की झोली में दो और उपलब्धियाँ जुड़ गई। एमबीए बैच 2023-25 के छात्र श्री देवेश पाठक को महिंद्रा फाइनेंस द्वारा शाखा प्रबंधक के पद पर प्लेसमेंट का प्रस्ताव दिया गया है। यह सात लाख रुपये का पैकेज है। दूसरे छात्र अब्दुल सलाम को आईसीआईसीआई होम फाइनेंस द्वारा रु. 6.52 लाख प्रति वर्ष के पैकेज पर प्लेसमेंट का प्रस्ताव मिला है। दोनों छात्रों ने अपनी सफलता का श्रेय सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एमबीए विभाग के शिक्षकों और कर्मचारियों को दिया है। एमबीए विभागाध्यक्ष और वाणिज्य संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. सौरभ ने कहा कि दोनो छात्रों के समर्पण और व्यावहारिक अनुभव व अकादमिक ज्ञान को आत्मसात करने की उनकी क्षमता को इस पद द्वारा सम्मानित किया गया है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने छात्रों के प्रयासों की सराहना की और कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के छात्रों का नियमित प्लेसमेंट शिक्षकों और छात्रों के लिए एक प्रोत्साहन है। विश्वविद्यालय अपने छात्रों की सफलता पर प्रसन्न है और युवा पीढ़ी को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने और उन्हें रोजगार के योग्य बनाने हेतु प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ज्ञान की भूमि

● रघुवीर

सीमाओं के पास, नेपाल के द्वार, सजता है ज्ञान का अनुपम संसार।
हरी–भरी धरती, प्राची की शान, यह है सिद्धार्थ की पावन पहचान।
कपिलवस्तु की पावन छाया, जहां बुद्ध ने पथ बतलाया।
उसी धरती पर जला है दीप, विद्या और बुद्धत्व का प्रतीक।
जहां पुस्तकें बोलती हैं मौन में,
बौद्ध ग्रन्थालय है शान्ति के कोन में।
ध्यान और ज्ञान का अद्भुत संगम,
बुद्धत्व की धारा बहे जिस प्रांगण।
कपिलवस्तु पार्क की हरियाली के पास,
छात्रों का चलता है ज्ञानमय प्रयास।
पिपरहवा स्तूप की दिव्य कहानी,
कहती है– यहां से शुरू हुई बुद्ध की रवानी।
और यहीं कुछ दूरी पर है एक सीमा रेखा,
उसका नाम है अलीगढ़वा बार्डर की रेखा।
जहां दो देशों की संस्कृति गले मिलती है
जहां शान्ति की बात हवा में खिलती है।
जब सुबह की पहली किरण मुसकाये,
और शीतल हवा गालों को सहलाये,
तब दूर हिमालय की रेखा दिख जाये
मानो प्रकृति स्वयं सिर झुकाये।
कपिलवस्तु की धरती महान,
जहां से सिद्धार्थ ने किया प्रयाण
खोजने का दुःख का निदान
बोध गया में जाकर पाया ज्ञान।
यह मात्र इमारत नहीं विचारों का धाम
यहां ज्ञान साधना चलती है अविराम।
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय हमारी शान
शान्ति शोध और सेवा का स्थान।
यह कविता समर्पित उस भूमि को
जहां बुद्ध के चरण पड़े,
है नमन उन बौधसत्व को
विश्वभर में फेले जिनके विचार बड़े।

कनिष्ठ सहायक, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

बुद्ध-प्रसंग

जेतवन में राजा प्रसेनजित् भगवान के पास था, उसी समय एक आदमी ने आकर प्रसेनजित के कान में कहा– ''देव मल्लिका देवी को पुत्री हुई।'' राजा सुनकर उदास हो गया। इसे जानकर भगवान ने कहा–

''राजन्, कोई–कोई स्त्रियाँ भी पुरुशों से बढ़ी–चढ़ी,
बुद्धिमती, शीलवती, सास की सेवा करने वाली और पतिव्रता होती हैं,
अतः पालन–पोशण कर।
उससे दिशाओं को जीतने वाला महाशूरवीर पुत्र उत्पन्न होता है,
वैसी अच्छी स्त्री का पुत्र राज्य का अनुशासन करता है।''

(राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'पालि साहित्य का इतिहास' से)

प्रेरणादायक जीवन और फोटोग्राफी की सामाजिक दृष्टि' विषय पर विक्की राय का विशेष व्याख्यान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर एवं नेक्स्टजन के संयुक्त तत्वावधान में 02 अगस्त 2025 को एक दिवसीय विशेष व्याख्यान का आयोजन हुआ, जिसमें अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफर विक्की रॉय मुख्य अतिथि रहे।कार्यक्रम में विक्की रॉय ने अपने जीवन के संघर्ष और सफलता की प्रेरक कहानी साझा करते हुए फोटोग्राफी की सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका पर प्रकाश डाला। दिल्ली की सड़कों से सफर शुरू कर, Forbes Asia's 30 Under 30 में स्थान पाने और संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के लिए कार्य करने तक की उनकी यात्रा ने सभी को प्रभावित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को संदेश दिया कि सपने देखने की हिम्मत रखो और उनके पीछे निरंतर प्रयास करो।

इस अवसर पर वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सौरभ श्रीवास्तव (कार्यक्रम संयोजक) एवं कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में डॉ. कहकशा खान, डॉ. विमल चंद, डॉ. धर्मेंद्र, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. हफीज, डॉ. संतोष सहित विभिन्न संकायों के प्राध्यापकगण एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा सम्मिलित हुए।

धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सौरभ श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को न केवल प्रेरित किया बल्कि फोटोग्राफी के महत्व को नए दृष्टिकोण से समझने का अवसर भी प्रदान किया।

डॉ. लक्ष्मण सिंह को शोध अनुदान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और सह आचार्य डॉ. लक्ष्मण सिंह को उच्च ऊर्जा ऑक्साइड से सुपरकैपेसिटरों के लिए उन्नत कैथोड सामग्री विकसित करने पर केंद्रित एक सहयोगी अनुसंधान परियोजना के लिए एक प्रतिष्ठित अनुदान से सम्मानित किया गया है। इस परियोजना का शीर्षक 'सुपरकैपेसिटरों के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इलेक्ट्रोड सामग्री के रूप में उच्च मात्रा स्पिनेल धातु ऑक्साइड का विकास' है, जिसका उद्देश्य उन्नत ऊर्जा संग्रहण क्षमताओं, स्थिरता और स्थिरता के साथ नयी कैथोड सामग्री का डिजाइन और संश्लेषण करना है। सुपरकैपेसिटरों में नवीकरणीय ऊर्जा प्रणाली, इलेक्ट्रिक वाहनों और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स सहित विभिन्न अनुप्रयोगों में ऊर्जा संग्रहण और वितरण को बदलने की क्षमता है।

‘हर घर तिरंगा’ कार्यक्रम के अंतर्गत रंगोली प्रतियोगिता का सफल आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के प्रशासनिक भवन में दिनांक 07 अगस्त, 2025 को शासन के निर्देशानुसार ‘हर घर तिरंगा’ कार्यक्रम के अंतर्गत रंगोली प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से गठित चार छात्र समूहों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागी समूहों को पुरस्कृत किया गया। प्रमुख रूप से आदित्य गुप्ता, शर्मिला, सारिका चौधरी, जानकी चौधरी, शकीला खातून, अंकिता शुक्ला, राधा शुक्ला, आभा फरहर, देवेश्वर पांडेय, स्वाति त्रिपाठी, मनमोहन गुप्ता, जितेन्द्र गुप्ता, अभिषेक यादव, अब्दुल कादिर, सखी श्रीवास्तव, नेहा गुप्ता, आराध्य यादव, काजल यादव, साधना चौधरी, सखी पटेल आदि छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

निर्णायक मंडल में डॉ. विमल चंद्र वर्मा, डॉ. अरविन्द रावत एवं डॉ. किरण गुप्ता सम्मिलित रहे। यह कार्यक्रम डॉ. सरिता सिंह एवं डॉ. रक्षा के समन्वयन में, डॉ. वंदना गुप्ता, डॉ. मनीषा बाजपेयी एवं डॉ. विनीता रावत द्वारा सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया। कार्यक्रम समिति ने सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समापन समारोह

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समापन समारोह के अंतर्गत सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में दिनांक 08 अगस्त 2025 को प्रभात फेरी, भाषण एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह के संरक्षण एवं कुलसचिव श्री दीना नाथ यादव के सहयोग से आयोजित हुआ।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने किया तथा डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेय और डॉ. यशवन्त यादव ने सक्रिय भूमिका निभाई। प्रभात फेरी विश्वविद्यालय परिसर से पंडितपुर बाजार तक निकाली गई।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने शहीदों के बलिदान को राष्ट्र की अमूल्य धरोहर बताया। प्रो. नीता यादव ने अपने उद्बोधन में कहा कि शहीदों के स्मरणार्थ ऐसे आयोजनों की सार्थकता सदैव बनी रहेगी।

तिरंगा राखी कार्यक्रम में देशभक्ति की महक

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में “तिरंगा राखी कार्यक्रम” का आयोजन रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ किया गया। ‘हर घर तिरंगा, हर कलाई तिरंगा’ थीम पर आयोजित इस विशेष अवसर पर छात्र–छात्राओं ने राष्ट्रध्वज के तीन रंगों से प्रेरित होकर सुंदर व भावनात्मक राखियाँ तैयार कीं और उन्हें सीमा सुरक्षा बल के जवानों को समर्पित किया।

माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करते हुए इसे राष्ट्र–प्रेम, सांस्कृतिक मूल्यों और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाला प्रेरणादायी आयोजन बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. नीता यादव, अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं अधिष्ठाता कला संकाय ने की। संचालन डॉ. सरिता सिंह ने किया तथा धन्यवाद–ज्ञापन डॉ. रक्षा द्वारा प्रस्तुत हुआ। आयोजन में डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. मनीषा बाजपेई एवं डॉ. आभा द्विवेदी का मार्गदर्शन तथा सतीश सुयश एवं संतोष का विशेष सहयोग रहा।

समाजशास्त्र में नवाचार

डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय का पेटेंट प्रकाशित

समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के समाजशास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय का “Managing Innovation and Traditional Knowledge: A Sociological Analysis” शीर्षक पर पेटेंट प्रकाशित हुआ है। यह सामाजिक विज्ञानों के लिए एक दुर्लभ और गौरवपूर्ण क्षण है।

डॉ. पांडेय का समाजशास्त्रीय मॉडल यह दर्शाता है कि पारंपरिक ज्ञान को किस प्रकार बिना उसकी सांस्कृतिक विरासत और समुदाय के मूल्यों को प्रभावित किए आधुनिक नवाचार के साथ संतुलित किया जा सकता है। यह शोध भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को संरक्षित रखने के साथ–साथ उसे उत्तरदायित्वपूर्ण विकास की दिशा में अग्रसर करता है।

मा. कुलपति प्रो. कविता शाह ने बधाई देते हुए कहा जहाँ पेटेंट प्रायः विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं, वहीं समाजशास्त्र में यह सफलता विश्वविद्यालय की नवाचारशील सोच का प्रमाण है। आन्तरिक गुणवत्ता निर्धारण प्रकोश्ठ (IQAC) के निदेशक प्रो. सौरभ ने कहा यह सिद्ध करता है कि समाजशास्त्र भी नवाचार की मुख्यधारा में सशक्त योगदान दे सकता है।

जीना सीखें

हाथों में अपनी शान हो, मन में अभिमान हो।
अपने तिरंगे की निराली आन–बान हो।
बन जाये पथ–प्रदर्शक संसार–भर का भारत–
फिर विश्वगुरु के रूप में अपना सम्मान हो।

हमने तब था मरना जाना, अब हम जीना सीखें।
नूतन ले संकल्प, लक्ष्य पर आगे बढ़ते दीखें।
विकसित भारत बने, हमारी है सबकी अभिलाषा।
होंगे सब सन्नद्ध तो निश्चय पूरी होगी आशा।

संपादक

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में तिरंगा-यात्रा एवं तिरंगा-महोत्सव प्रदर्शनी

11 अगस्त 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत एनसीसी एवं एनएसएस के संयुक्त तत्वावधान मे तिरंगा यात्रा एवं तिरंगा महोत्सव प्रदर्शनी का आयोजन हुआ।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने तिरंगा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया और युवाओं में देशभक्ति, अनुशासन तथा समाजोपयोगी शिक्षा व अनुसंधान के महत्व पर बल दिया।

प्रदर्शनी में स्थानीय व्यवसाय व स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने हेतु बुद्धा डिलाइट द्वारा वन जिला वन प्रोडक्ट के अंतर्गत काला नमक चावल से बनी कुकीज, जैक फास्ट फूड नौगढ़ तथा स्थानीय किसानों के स्टॉल आकर्षण का केंद्र रहे। विश्वविद्यालय परिवार ने इन स्टॉलों से सामग्री क्रय कर स्थानीय उद्यमिता को समर्थन दिया। प्रदर्शनी में सहभागी उद्यमियों ने ऐसे आयोजनों को रोजगार, व्यवसाय और विकास के लिए सकारात्मक पहल बताया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस पर संबोधि केंद्रीय ग्रंथालय में प्रेरणादायक कार्यक्रम

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के संबोधि केंद्रीय ग्रंथालय में राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस के अवसर पर 12 अगस्त 2025 को एक प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित हुआ। यह दिवस भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक प्रो. एस.आर. रंगनाथन की जयंती पर मनाया जाता है।

मुख्य वक्ता डॉ. राजेश कुमार सिंह, सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष, ने पुस्तकालय की बदलती भूमिका, डिजिटल संसाधनों के महत्व और प्रो. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पुस्तकालय को ज्ञान का मंदिर बताते हुए विद्यार्थियों से इसका अधिकतम उपयोग करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में शिक्षकगण, छात्र–छात्राएं एवं पुस्तकालय स्टाफ ने सक्रिय सहभागिता की।

दैनिक समाचार पत्रों के हवाले से-

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में पुस्तक का लोकार्पण

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में पुस्तक का लोकार्पण करती कुलपति प्रो. कविता शाह। स्रोत विवि

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में योग एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई।

इसमें समाजशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. मयंक कुशवाहा की पुस्तक इंट्रोड्यूसिंग सोसियालोजी का लोकार्पण कुलपति प्रो. कविता शाह द्वारा किया गया।

वक्ताओं ने कहा कि पुस्तक में आधुनिक सामाजिक सिद्धांतों, परिप्रेक्ष्यों और समाज की कार्यप्रणाली को भारत के ग्रामीण व शहरी संदर्भों के साथ जोड़ा गया है। कुलपति ने डॉ. कुशवाहा के शैक्षिक योगदान की सराहना करते हुए कहा कि यह पुस्तक विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी तथा यह अकादमिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। संवाद

सिद्धार्थ विवि के छात्र को प्लेसमेंट की पेशकश

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विवि कपिलवस्तु के एमबीए विभाग के छात्र अब्दुल सलाम को आईसीआईसीआई होम फाइनेंस की ओर से प्रति वर्ष 6.52 लाख पर प्लेसमेंट की पेशकश की गई है। अब्दुल सलाम एक मध्यम पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं। उनकी सफलता का श्रेय सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के एमबीए विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा प्रदान किए गए मजबूत प्रशिक्षण और शिक्षा को जाता है। एमबीए विभाग के प्लेसमेंट समन्वयक डॉ. दीपक जायसवाल ने छात्र के प्रयासों की सराहना की और

अब्दुल सलाम।

कहा कि अब्दुल का चयन सभी युवा छात्रों के लिए प्रेरणा है। एमबीए विभाग के प्रमुख और वाणिज्य संकाय के डीन प्रो. सौरभ ने बधाई दी। कुलपति प्रो. कविता शाह ने भी विभाग के प्रयासों की सराहना की है।

समाजशास्त्र विभाग के शोध छात्रों को मिला पीएचडी उपाधि

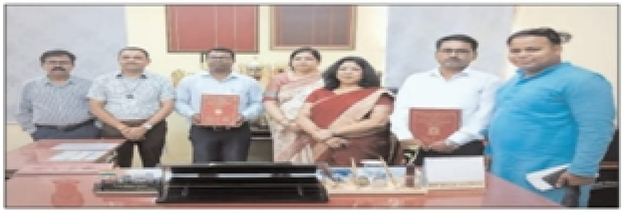

लोक कर्ता संवाददाता

आनन्दनगर (महराजगंज)। एलबीएस पीजी कॉलेज के डॉ. प्रवीण मिश्रा के निर्देशन में शोधरत दो शोध छात्रों क्रमशः अमरनाथ (असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर) और अमित कुमार गोंड़ (असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, महराजगंज) को पीएचडी की उपाधि प्राप्त हुआ है।

सफलता

उक्त उपाधि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग और लाल बहादुर शास्त्री स्मा.पीजी कॉलेज, आनंदनगर के शोधार्थी की पहली उपाधि है। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ बलराम भट्ट प्राचार्य डॉ राम पाण्डेय, अजीत सिंह भागीरथी भट्ट, अखिलेश मिश्र, चंद्र प्रकाश सहित लोगों ने खुशी व्यक्त की है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से कुसुम यादव को मिली शोध की उपाधि

सरताज आलम

कपिलवस्तु/सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर से कुसुम यादव ने शोध की उपाधि प्राप्त कर की है।

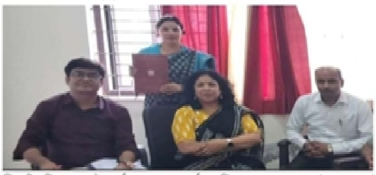

हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 हरीश कुमार शर्मा के निर्देशन में कुसुम देवी की विश्वविद्यालय में आयोजित शोध मौखिक विषय –"अवधि के संस्कार गीतों में अभिव्यक्ति स्त्री– सम्वेदना" पर सम्पन्न हुई। जिसमे बाह्य परीक्षक इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज के प्रोफेसर अमरेन्द्र त्रिपाठी रहे। अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्येन्द्र कुमार दूबे, शिवपति पीजी कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर अरविन्द सिंह, डॉ0 शिवेन्द्र सिंह सहित विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण, शोधार्थी गण, कार्यालय सहायक आशीष यादव, राजेश यादव सहित अन्य लोग ने उपस्थित होकर बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

आशुतोष श्रीवास्तव को इंग्लैंड संस्था देगी फेलोशिप

सिद्धार्थनगर : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान
के अध्यक्ष व सह आचार्य डा. आशुतोष श्रीवास्तव
नियन सोसाइटी फेलोशिप की अर्हता को प्राप्त किया
लैंड की लिनियन सोसाइटी ने फेलो के रूप में

शुतोष श्रीवास्तव

चयनित किया है। वर्ष 1788 में लंदन की लिनियन सोसाइटी प्राकृतिक इतिहास, वर्गीकरण विज्ञान और विकास पर केंद्रित है। यह विश्व की सबसे पुरानी जैविक सोसाइटी है। प्राकृतिक चयन के विकास पर सिद्धांत आज भी अध्ययन का विषय है। डा. आशुतोष
व रायल नार्वेजियन गवर्नमेंट फेलोशिप और
ल रिसर्च फेलोशिप के भी प्राप्तकर्ता हैं। इससे
उन्हें अमेरिका की इंडस फाउंडेशन की ओर से
ान उत्कृष्टता पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा
। डा. आशुतोष श्रीवास्तव मत्स्य पालन और जलीय
ज्ञान के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग
कनीक पर काम कर रहे हैं। कुलपति प्रो. कविता
विज्ञान संकाय की अध्यक्ष प्रो. प्रकृति राय ने इस
य पर हर्ष व्यक्त किया है।

4 दैनिक जागरण गोरखपुर, 3 अगस्त, 2025 सिद्धार्थनगर

इन्फ्लिबनेट से मिलेगी शैक्षणिक सामग्री

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में कार्यशाला शुरू सिवि और इन्फ्लिबनेट के साथ हुआ एमओयू

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने शनिवार को कहा कि इन्फ्लिबनेट (इंफारमेशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क सेंटर) से शिक्षक, शोधार्थी व छात्रों को गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध होगी। इन्फ्लिबनेट की सेवाएं विश्वविद्यालय के अकादमिक, शोध एवं नवाचार आधारित माहौल को नई गति और दृष्टि प्रदान करेंगी। वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ओएनओएस) योजना भारत सरकार की एक क्रांतिकारी पहल है। इसके माध्यम से सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को एक समान और व्यापक डिजिटल शैक्षणिक सामग्री तक पहुंच सुनिश्चित की जा रही है।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने सिवि सभागार में इन्फ्लिबनेट सेवाओं पर एक दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ सत्र में कहा। उन्होंने कहा कि सिवि के केंद्रीय ग्रंथालय की ओर से इन्फ्लिबनेट की विभिन्न डिजिटल व शोधोन्मुख सेवाओं के उपयोग और लाभ मिलेगा। कुलाधिपति आनंदी बेन पटेल के मार्गदर्शन में सिवि ने इन्फ्लिबनेट के साथ विभिन्न अकादमिक एवं शोध संबंधी सेवाओं के लिए एमओयू किया है। ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। इससे शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी अत्यंत लाभान्वित होंगे। केंद्रीय ग्रंथालय वर्तमान में ओएनओएस, शोधगंगा, शोधगंगोत्री, शोधशुद्धि जैसी महत्वपूर्ण सेवाओं का प्रभावी उपयोग कर रहा है। शोध की गुणवत्ता, मौलिकता और संसाधनों की पहुंच को व्यापक बनाती हैं। प्रभारी पुस्तकालय अध्यक्ष के नोडल अधिकारी डा. आशुतोष श्रीवास्तव ने इन्फ्लिबनेट की विभिन्न सेवा, डिजिटल संसाधन, पंजीकरण, शोध डाटा के सत्यापन, शैक्षणिक लेखन में उपयोग, राष्ट्रीय मूल्यांकन, नैक में इसकी भूमिका के संबंध में बताया। प्रो. सौरभ, प्रो. नीता यादव, प्रो. दीपक बाबू, डा. अविनाश प्रताप सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

सिवि सभागार मे कार्यशाला में व्याख्यान देती कुलपति प्रो. कविता शाह व अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफर विक्की राय • सौ. सिवि प्रशासन

सपने देखने की हिम्मत रखें और उसका करें पीछा

सिद्धार्थनगर : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के सभागार मे शनिवार को एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन हुआ। अंतरराष्ट्रीय डाक्यूमेंट्री फोटोग्राफर विक्की राय ने छात्रों के साथ संवाद स्थापित किया। फोटोग्राफी के सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। जीवन मे आने वाले संघर्ष और सफलता प्राप्त करने के सफर को साझा किया। व्याख्यान का आयोजन सिवि व नेक्सटजन ने संयुक्त रूप से किया। फोटोग्राफर विक्की राय ने कहा कि जीवन मे सपने देखने का हक सभी को है। इसकी हिम्मत रखनी चाहिए और अपने सपने का पीछा करना चाहिए। परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों, लक्ष्य से नहीं भटकें तभी सफलता मिलेगी। डाक्यूमेंट्री के माध्यम से बताया कि एक बालक जिसने कभी दिल्ली की सड़को पर कचरा बि बीनने का काम किया। वही आज विश्व के प्रसिद्ध फोटोग्राफरों मे गिनती हो रही है। बचपन मे दिल्ली पहुंचने के बाद एक ट्रस्ट में शरण लिया। यहां पर जीवन को नया दृष्टिकोण मिला। फोटोग्राफी की यात्रा यहीं से शुरू हुई, जब उन्हें पहली बार कैमरा मिला। कड़ी मेहनत, समर्पण और लगन से फोटोग्राफी की बारीकियों को सीखा। अमेरिका के अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन और डाक्यूमेंट्री एंड ह्यूमन राइट्स प्रोजेक्ट ने भी सराहा। फोर्ब्स एशिया 30 अंडर 30 मे भी स्थान मिला।

यूनाइटेड नेशन और वर्ल्ड बैंक सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के लिए भी काम किया। वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सौरभ श्रीवास्तव ने भी व्याख्यान दिया।

कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव, डा. कहकशा खान, डा. विमल चंद, डा. धर्मेंद्र, डा. मुन्नू खान, डा. हफीज समेत अन्य मौजूद रहे।